



BACKGROUNDERS
Press Information Bureau
Government of India

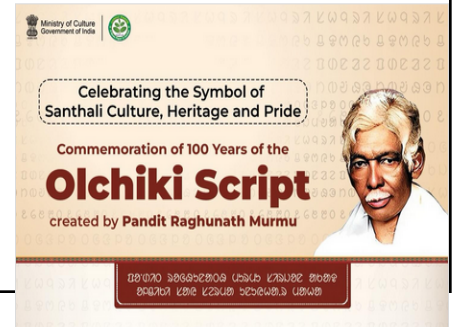
ओल चिकी लिपि

100 वर्षों की भाषाई सशक्तिकरण की यात्रा

16 फरवरी 2026

मुख्य बिंदु

- संस्कृति मंत्रालय, 16 फरवरी 2026 को नई दिल्ली में ओल चिकी लिपि की शताब्दी समारोह का उद्घाटन समारोह आयोजित कर रहा है।
- भारत सरकार ओल चिकी लिपि के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में एक स्मारक सिक्का और स्मारक डाक टिकट जारी कर रही है।
- ओल चिकी लिपि का विकास 1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू ने संथाली भाषा के लिए विशेष रूप से किया था, जिसे बाद में 2003 में भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया।
- लिपि में 30 अक्षर हैं, जो संथाली की ध्वनिविज्ञान को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करते हैं।



परिचय

सदियों तक ज्ञान और सांस्कृतिक स्मृति मुख्य रूप से बोलचाल के माध्यम से संचारित होती रही। संथाली भाषा लोककथाओं, गीतों, अनुष्ठानों और कहानियों की समृद्ध परंपरा के माध्यम से अपनी

पहचान बनाए रखती रही। ओल चिकी संथाली भाषा की आधिकारिक लिपि है, जो झारखंड, ओडिशा, पश्चिम बंगाल, असम और बिहार में व्यापक रूप से बोली जाती है। ओल चिकी लिपि के शताब्दी समारोह के उद्घाटन कार्यक्रम में महत्वपूर्ण अतिथि और सम्मानित अतिथि उपस्थित होंगे।

ओल चिकी लिपि की शताब्दी समारोह का उद्घाटन

संस्कृति मंत्रालय और फागुन (मासिक संथाली समाचार पत्र) के सहयोग से 16 फरवरी 2026 को नई दिल्ली के डॉ. अम्बेडकर इंटरनेशनल सेंटर में ओल चिकी लिपि की शताब्दी समारोह का उद्घाटन आयोजित होगा। भारत की राष्ट्रपति श्रीमती द्रौपदी मुर्मू मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होंगी। इसके अलावा, केंद्रीय जनजातीय कार्य मंत्री श्री जुवाल ओराम और केंद्रीय संस्कृति एवं पर्यटन मंत्री श्री गजेंद्र सिंह शेखावत भी उपस्थित होंगे।

कार्यक्रम की विशेषताएं

- ओल चिकी लिपि पर विशेष प्रदर्शनी
- ओल चिकी लिपि पर एक लघु फिल्म की स्क्रीनिंग
- इसकी याद में सिक्का जारी
- इस लिपि के 100 साल के इतिहास पर एक डाक टिकट जारी
- सांस्कृतिक कार्यक्रम

ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

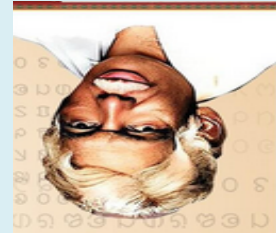
20वीं सदी से पहले संथाली भाषा को विभिन्न उधारित लिपियों जैसे रोमन, बंगाली, ओडिया और देवनागरी में लिखा जाता था। इन लिपियों ने सीमित लिखित अभिव्यक्ति की अनुमति दी, लेकिन संथाली की विशिष्ट ध्वनिविज्ञान को सटीक रूप से प्रतिबिंबित नहीं कर पाईं। संथाली में ग्लोटल स्टॉप और विशिष्ट स्वर पैटर्न जैसी अनूठी ध्वनियां हैं, जिन्हें बाहरी लिपियों से सही रूप से प्रतिबिंबित करना कठिन था। इससे उच्चारण और अर्थ में विकृति उत्पन्न होती थी, जिससे शिक्षा और भाषाई विकास में बाधा उत्पन्न होती थी।



पंडित रघुनाथ मुर्मू: ओल चिकी के निर्माता

पंडित रघुनाथ मुर्मू का जन्म 1905 में ओडिशा के मयूरभंज जिले के डांडबोसे गांव में हुआ था। वह संथाली परंपराओं में गहराई से डूबे हुए थे और अपनी भाषा को एक विशिष्ट लिखित पहचान देने की आवश्यकता महसूस करते थे। उनके द्वारा

1925 में ओल चिकी लिपि का विकास किया गया, जिसने संथाली को एक वैज्ञानिक और ध्वनिविज्ञानिक लिखने की प्रणाली प्रदान की। उन्होंने संथाली समुदायों में ओल चिकी के लिए साक्षरता और जागरूकता को बढ़ावा देने के लिए सक्रिय रूप से कार्य किया। उनके योगदान के लिए रांची विश्वविद्यालय से सम्मानजनक डॉक्टरेट और ओडिशा साहित्य अकादमी से सम्मान प्राप्त किया।



ओल चिकी लिपि का विकास

ओल चिकी लिपि का विकास 1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा संथाली के लिए एक वैज्ञानिक और समर्पित लिखने की प्रणाली प्रदान करने के लिए किया गया था। इसमें 30 अक्षर हैं, जो स्वर और व्यंजन दोनों को प्रतिबिंबित करते हैं। प्रत्येक प्रतीक एक विशिष्ट ध्वनि के लिए है और ग्लोटल स्टॉप और अन्य अनूठी ध्वनियों को सटीक रूप से प्रतिबिंबित करता है।

- 1925 में ओल चिकी लिपि विकसित की, जिससे संथाली को अपनी स्वयं की लिपि मिली।
- उन्होंने ओल चिकी में पहली पुस्तक हाई सेरेना (1936) की रचना की।

पंडित मुर्मू ने बिड़ू-चंदन जैसी प्रभावशाली रचनाएँ भी लिखीं, जो ओल चिकी लिपि के माध्यम से संथाली संस्कृति और भावनाओं की गहराई को दर्शाती हैं। उनके योगदान को व्यापक मान्यता मिली,

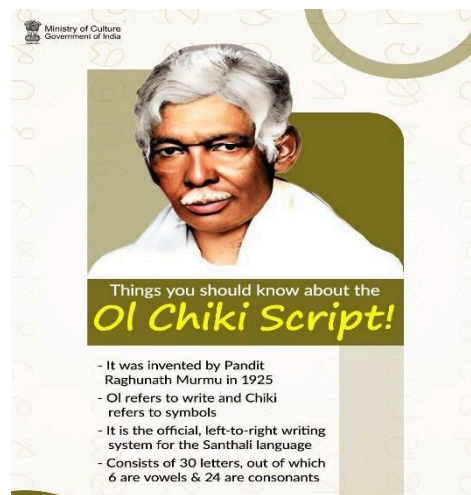
जिसमें रांची विश्वविद्यालय से मानद डॉक्टरेट उपाधि और ओडिशा साहित्य अकादमी से सम्मान शामिल हैं¹

ओल चिकी लिपि की उत्पत्ति

ओल चिकी को 1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा विकसित किया गया था ताकि संथाली को एक वैज्ञानिक और समर्पित लेखन प्रणाली प्रदान की जा सके।

मुख्य भाषाई विशेषताएँ शामिल हैं:

- विशेष रूप से संथाली के लिए डिज़ाइन की गई
- स्वरों और व्यंजनों का प्रतिनिधित्व करने वाली 30 अक्षरें
- प्रत्येक प्रतीक एक विशिष्ट ध्वनि से सीधे मेल खाता है
- ग्लोटल स्टॉप्स और अद्वितीय ध्वन्यात्मक तत्वों को सटीक रूप से कैद करती है
- अनुकूलित लिपियों के विपरीत, ओल चिकी ने भाषाई रूप से सटीक और सांस्कृतिक रूप से जड़ों वाली लिखित अभिव्यक्ति का माध्यम प्रदान किया।



ओल चिकी के परिचय ने संथाली को एक लिखित भाषा के रूप में विकसित होने में एक मोड़ का निर्माण किया। भाषाई प्रामाणिकता में निहित एक लिपि प्रदान करके, इसने भाषा को विशेष रूप से मौखिक माध्यम से एक संरचित लिखित रूप में संक्रमण करने में सक्षम बनाया। इस लिपि ने शब्दावली, व्याकरण और उच्चारण को सटीकता के साथ दर्ज करना संभव बनाया। इसने भाषा उपयोग के मानकीकरण को भी सुगम बनाया, जिससे शिक्षण, अनुवाद और प्रकाशन का समर्थन मिला।

²संवैधानिक मील का पत्थर: संथाली को आठवीं अनुसूची में स्थान (2003)

2003 में 92वें संवैधानिक संशोधन अधिनियम के माध्यम से संथाली भाषा को भारतीय संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल किया गया। इस ऐतिहासिक मान्यता ने संथाली को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध लेकिन प्रशासनिक रूप से उपेक्षित भाषा से भारत की औपचारिक भाषाई ढांचे में स्थान दिलाया। इससे शिक्षा, शासन और सार्वजनिक संचार में

¹

<https://www.facebook.com/stscdev/videos/pandit-raghunath-murmus-enduring-legacy-lives-on-through-his-extensive-literary-980908990313742/>

² https://www.education.gov.in/en/cp_languages

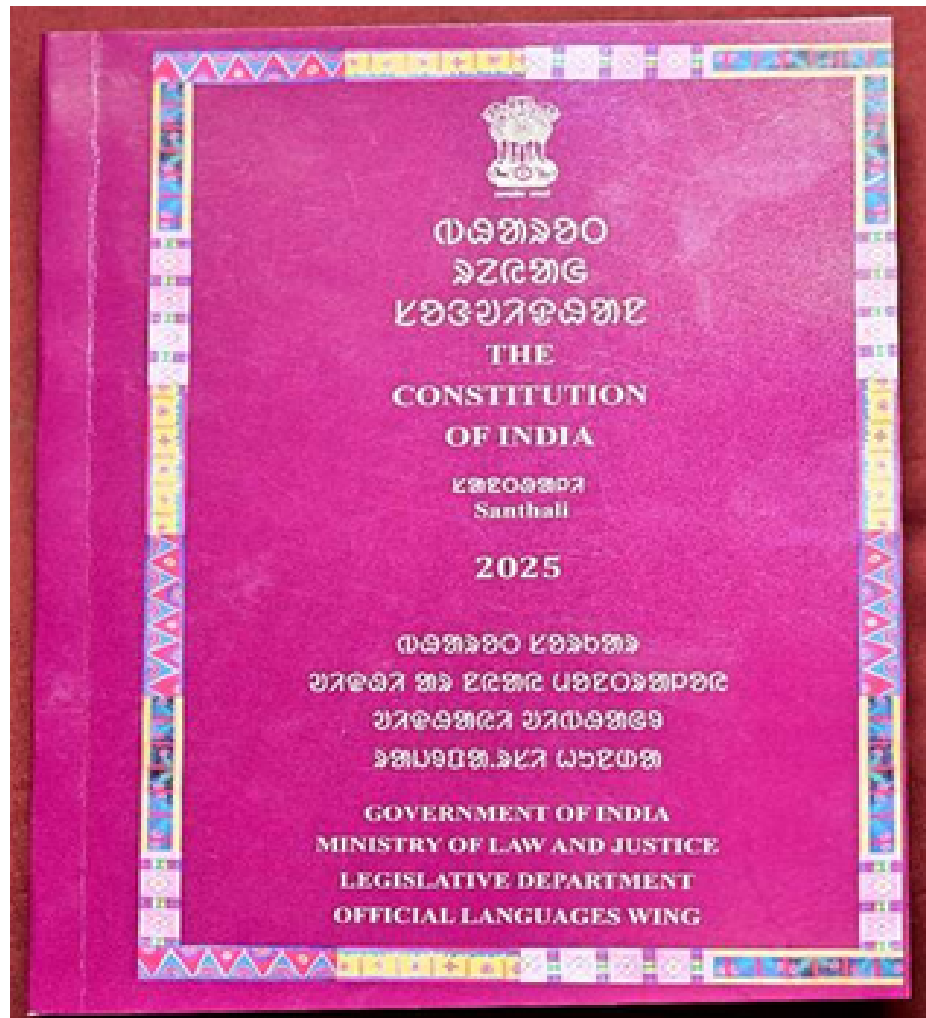
संस्थागत समर्थन प्राप्त हुआ, जिससे प्रतियोगी परीक्षाओं, साहित्यिक प्रचार और शोध में इसका उपयोग संभव हुआ। इस मान्यता ने ओल चिकी लिपि के औपचारिक उपयोग को बढ़ावा दिया, जिससे विद्यालयी पाठ्यक्रम और राज्य स्तरीय प्रकाशनों में इसका उपयोग बढ़ा।

संविधान का संथाली अनुवाद: भाषाई न्याय और लोकतांत्रिक पहुंच³

दिसंबर 2025 में भारत के संविधान का संथाली भाषा में अनुवाद किया गया और ओल चिकी लिपि में प्रकाशित किया गया। यह

पहली बार था जब राष्ट्र का मूल कानूनी दस्तावेज संथाली में उपलब्ध हुआ। यह अनुवाद संवैधानिक मूल्यों और अधिकारों को संथाली भाषी नागरिकों के लिए सुलभ बनाने का एक महत्वपूर्ण कदम है। यह पांचवीं और छठी अनुसूची के तहत जनजातीय सुरक्षा के प्रावधानों को समझने में सहायता करता है।

यह ओल चिकी लिपि को संथाली भाषा की प्रमुख लिखित अभिव्यक्ति के रूप में सुदृढ़ करता है और लोकतांत्रिक सशक्तिकरण को बढ़ावा देता है।



³ <https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2208453®=6&lang=1>

स्मारक सिक्का और डाक टिकट

ओल चिकी लिपि के 100 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में भारत सरकार ₹100 का स्मारक सिक्का जारी कर रही है। सिक्के के उलटे पक्ष पर पंडित रघुनाथ मुर्मू का चित्र और ओल चिकी अक्षरों के साथ "100 वर्षों की लिपि" की शीर्षक अंकित है। इसके साथ ही एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया जाएगा, जो भारत की लंबी फिलाटेलिक परंपरा को जारी रखता है।

सिक्के का डिज़ाइन राष्ट्रीय प्रतीकवाद और सांस्कृतिक श्रद्धांजलि दोनों को प्रतिबिंबित करता है: अग्रभाग पर अशोक का सिंह स्तंभ तथा अंकन दिखाया गया है, जबकि पीछे के भाग पर पंडित रघुनाथ मुर्मू का चित्र ओल चिकी अक्षरों की पृष्ठभूमि पर है, साथ ही लिपि के 100 वर्ष पूर्ण होने का स्मरण कराने वाला शिलालेख भी है। सिक्के का डिज़ाइन राष्ट्रीय प्रतीकवाद और सांस्कृतिक श्रद्धांजलि दोनों को प्रतिबिंबित करता है: अग्रभाग पर अशोक का सिंह स्तंभ तथा अंकन दिखाया गया है, जबकि पीछे के भाग पर पंडित रघुनाथ मुर्मू का चित्र ओल चिकी अक्षरों की पृष्ठभूमि पर है, साथ ही लिपि के 100 वर्ष पूर्ण होने का स्मरण कराने वाला शिलालेख भी है।

यह जारीकरण लिपि की परिवर्तनकारी भूमिका को औपचारिक राष्ट्रीय मान्यता प्रदान करता है, जो भाषाई पहचान को मजबूत करने, साक्षरता को बढ़ावा देने और स्वदेशी विरासत को संरक्षित करने में सहायक रही है। ओल चिकी लिपि को भारत की स्मारक सिक्का शृंखला में स्थान देकर, यह पहल देश के सांस्कृतिक मोज़ेक में इसके महत्व को स्वीकार करती है और भावी पीढ़ियों के लिए आदिवासी ज्ञान परंपराओं की रक्षा के महत्व को पुनः पुष्ट करती है।

इस सिक्का श्रद्धांजलि के पूरक के रूप में, लिपि के शताब्दी मील के पत्थर को चिह्नित करने के लिए एक स्मारक डाक टिकट भी जारी किया जा रहा है। भारत की लंबे समय से चली आ रही फिलेटेली परंपरा को ध्यान में रखते हुए, जो सांस्कृतिक और भाषाई उपलब्धियों को सम्मानित करती है, यह टिकट राष्ट्रीय मान्यता का एक स्थायी प्रतीक के रूप में कार्य करता है।



निष्कर्ष

आज, ओल चिकी केवल एक लेखन प्रणाली से कहीं अधिक का प्रतिनिधित्व करती है। यह भाषाई गरिमा, सांस्कृतिक लचीलापन और बौद्धिक आत्मनिर्णय का प्रतीक है। पिछले एक शताब्दी में, इस लिपि ने संथाली बोलने वालों को अपनी पहचान को दृढ़ करने में सक्षम बनाया है, साथ ही आधुनिक शिक्षा और सार्वजनिक जीवन में भागीदारी करते हुए। इसने भारत की भाषाई विविधता को मजबूत करने में भी योगदान दिया है, जिससे स्वदेशी आवाज़ें औपचारिक ज्ञान प्रणालियों में अभिव्यक्ति पा सकें।

ओल चिकी लिपि की शताब्दी केवल समय के बीतने को ही चिह्नित नहीं करती, बल्कि भाषा की स्थायी शक्ति को दर्शाती है जो पहचान, गरिमा और सांस्कृतिक निरंतरता का आधार है। 1925 में पंडित रघुनाथ मुर्मू द्वारा इसके सृजन से लेकर शिक्षा, साहित्य और संवैधानिक मान्यता प्रदान करने में इसकी भूमिका तक, ओल चिकी ने संथाली भाषा को मौखिक परंपरा से एक जीवंत लिखित माध्यम में परिवर्तित कर दिया है। इसकी यात्रा स्वदेशी ज्ञान प्रणालियों की लचीलापन को प्रतिबिंबित करती है और राष्ट्रीय ढांचे के भीतर भाषाई विविधता को संरक्षित करने के महत्व को रेखांकित करती है। 2003 में संथाली को अष्टम अनुसूची में शामिल करना और ओल चिकी के 100 वर्ष पूर्ण होने पर स्मारक सिक्का तथा टिकट जारी करना, इस लिपि को भारत की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न अंग मानने का प्रतीक है।

जैसे ही ओल चिकी अपने अगले शताब्दी में प्रवेश करती है, यह परंपरा और आधुनिकता के बीच एक पुल के रूप में खड़ी है और भावी पीढ़ियों के लिए एक प्रकाशस्तंभ है, जो इस विचार को पुनः पुष्ट करती है कि भाषा केवल संवाद का साधन नहीं है, बल्कि सामूहिक स्मृति और पहचान की जीवंत अभिव्यक्ति है और भारत की सांस्कृतिक विरासत का अभिन्न हिस्सा बन चुकी है।

संदर्भ

भारत के राष्ट्रपति कार्यालय

https://presidentofindia.nic.in/press_releases/president-india-releases-constitution-india-santhali-language

संस्कृति मंत्रालय

<https://www.instagram.com/p/DUvMW5jEy61/>

वित्त मंत्रालय

<https://egazette.gov.in/WriteReadData/2026/269981.pdf>

ऑल इंडिया रेडियो

<https://www.newsonair.gov.in/president-murmu-releases-constitution-in-santhali-language-at-rashtra-pati-bhavan/>

प्रेस इनफॉर्मेशन ब्यूरो

<https://www.pib.gov.in/PressReleasePage.aspx?PRID=2208484®=3&lang=1>

<https://www.pib.gov.in/PressReleaseDetail.aspx?PRID=2208453®=6&lang=1>

PIB Research Unit

पीके/ केसी /एमएम

(Release ID: 2228697)